

[illegible]

आदि सिद्धोच्चरुद्रय कृकया इकीं पूजयामि नमः॥ गावायत्या स्वादि नः
कादृशं रुद्रया इकीं पूजयामि नमः॥ स्वयं रुद्रमूकानन्दनाथया इकीं पू
जयामि नमः॥ ॥ अक्षयवक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा हा॥ ॐ यं वैलावनाय वक्रः
पूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ अक्षयवक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा
हा॥ ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ यं यम उ
नाय वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ नो नो मक वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा
रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ यः

या उलवक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृ
त्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ यं यम उनाय वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रः
स्वा हा॥ ॐ यं यम उनाय वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॐ विविधो गवक्र
पूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॐ नै नवकानक वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रु
द्रस्वा हा॥ ॥ त्रियी जलि ३॥ तर्पण ३॥ अउरु पूजा ॥ श्रीगणेशाय नमः
दि॥ यानि मूर्त्ति दग्ध ३॥ ॥ वलि विनय ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रः
स्वा हा॥ ॐ यं यम उनाय वक्रपूर्य्युषी प्रगी कृत्वा रुद्रस्वा हा॥ ॥ ॐ यः

कुरु शयनविद्यामाकृष्य कुरु शक्तिनिर्झरि ह्यस्तु ॥ आवाहनादि ॥
यानिमूढादृश्य ॥ ॥ विष्णुवर्माप्रियां लिख ॥ नव्ये पत्र ॥ ॥ यत्
गनित्यायुः ॥ ॥ ब्रह्मांशं श्रीकाभस्थानीनित्यायादाकां यज्यामि नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ब्रह्मांशं श्रीकाभस्थानीनित्यायादाकां यज्यामि नमः ॥ ॥ ३०० नित्यादि
नित्यायादाकां ॥ ३०० रुद्राय नित्यायादाकां यज्यामि ॥
३०० वक्रिवासीना नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० मेरुवर्जस्थानी
नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० गिवद्वानित्यायादाकां यज्यामि ॥

ज्यामि ॥ ३०० लवितानित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० कलसुन्दरी
नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३००
ब्रह्मालयनाका नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० विजया नित्यायादाकां
यज्यामि ॥ ३०० भद्रमंगलानित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० काला
लामालिनानित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३०० विविधानित्यायादाकां
यज्यामि ॥ ३०० श्री ४ विष्णुसुन्दरी नित्यायादाकां यज्यामि ॥ ३००
तन्मन्त्रावन्तयुः ॥ ३०० श्रीगणेशाय नमः ॥ ३०० लामालिनानित्यायादाकां

कौं पूजयामि॥ कौं श्रीं वै वटुकनाथवल्लभा म्हायाइ कौं पूजयामि॥ कौंः
श्रीं कौं कामदेवस्य म्हायाइ कौं पूजयामि॥ कौं श्रीं वृं वसुकेयः
स्य म्हायाइ कौं पूजयामि॥ कौं श्रीं जम्बुकानन्दनाथयाइ कौं पूजया
मि॥ कौं श्रीं यवगिवा नन्दनाथदिदिव्योद्युतयाइ कौं पूजयामि
॥ कौं श्रीं रामानन्दनाथदिसिद्धोद्युतयाइ कौं पूजयामि॥ कौं श्रीं
वृकानन्दनाथदिमानोद्युतयाइ याइ कौं पूजयामि॥ वरुनसुः
त्रिं वरुणाय नमः॥ कौं श्रीं अनिमदिष्टासिद्धियाइ कौं पूजयामि

मं अङ्गि नां म प म्हायाइ

यनीत्यादि

नर्थयामि॥ सगरस्य नमः॥ वरुनसु मध्यं वरुणाय नमः॥ कौं श्रीं वृक
पमदि, असिनां मदिष्टायाइ कौं पूजयामि नर्थयामि॥ सगरस्य नमः
॥ वरुनसु अक वरुणाय नमः॥ श्रीं कौं सर्वसं कारिना त्यादिष्टायाइ
कौं पूजयामि नर्थयामि॥ सगरस्य नमः॥ अं श्रीं सोः ४ त्रिपुनाष्टा
याइ कौं पूजयामि नर्थयामि॥ अं कौं सोः ४ त्रिपुनाष्टायाइ कौं पू
जयामि नर्थयामि॥ कौं श्रीं नारायणसोः ४ युक्तयागि नमः ४ श्रीं देवा
कृमा रुतवक्रष्टायाइ कौं पूजयामि नर्थयामि॥ अं वारुनादि॥

ॐ सर्वस्वकारिणि मूर्धा दर्शय ॥ ॥ ॐ श्रीं वा उ ग य गाय नमः ॥ ॐ श्रीं
का मा क र्म णा त्या दि श्री वा इ का यू ज या मि न र्थ या मि ॥ स ग ल्प स्थान मः ॥
ॐ क्रां सो ऽ धि यू न ग णा वा इ का यू ज या मि न र्थ या मि ॥ ॐ श्रीं त्रि ना ऽ स
स स्ता यु क या गि न्ना ऽ स र्वा सा य वि दू न क य क्त्वा वा इ का यू ज या मि न
र्थ या मि ॥ मूल मन्त्र ॥ श्री वा ह ना दि ॥ ॐ सर्व वि द्या य ना मूर्धा दर्शय ॥
॥ मू ष्म य गाय नमः ॥ ॐ श्रीं कं श्रीं न ग कू सू मा द वी श्री वा इ का यू ज
या मि न र्थ या मि ॥ स ग ल्प स्थान मः ॥ ॐ क्रां सो ऽ धि यू न हू न्द वी श्री वा इ

कां पूजयामि न र्वयामि॥ ॐ श्रीं ॥ वृताः समस्ताः पुण्यकृतं नमानि न्यः सर्व
 संश्रुतं यत्कृष्णायार्द्रकां पूजयामि न र्वयामि॥ मूलमनु॥ अथाह नृनादि॥ ॐ
 सर्वार्थकर्मणि मूर्ध्नि नमः॥ चतुर्दशभवनचक्राय नमः॥ ॐ श्रीं सर्वसंश्रु
 तिभाष्यादिः॥ अकिंशुयार्द्रकां पूजयामि न र्वयामि॥ सगरलक्ष्मी नमः॥ ॐ
 श्रीं श्रीं ॥ शिष्यावासीनां निर्यायकृष्णायार्द्रकां पूजयामि न र्वयामि॥ ॐ
 श्रीं वृताः समस्ताः संप्रदायकमयानि न्यः सर्वमोक्षाय कृष्णायार्द्र
 कां पूजयामि न र्वयामि॥ मूलमनु॥ अथाह नृनादि॥ ॐ सर्ववर्णकनाः

मूडीदगय॥५॥ वायुदगका नमनम॥ जाँघी सर्वसिद्धिपदत्यादिशा
पाइकी पूजयामिनर्थयामि॥ सगलत्यानम॥ हँकी सोऽशियूः
नानित्याचक्रवनाशापाइकी पूजयामिनर्थयामि॥ जाँघीवना
समसाकलकोलयागिन्म॥ सर्वार्थसाधकचक्रयापाइकी पूजया
मिनर्थयामि॥ मूलमनु॥ आवाहनादि॥ स॥ सर्वोत्पादिनी मूडीदग
य॥५॥ मूकदगका नमनम॥ जाँघी सर्वसंसारिणीत्यादिशाया
इकी पूजयामिनर्थयामि॥ सगलत्यानम॥ जाँकी सोऽशियूनामनीः

[illegible]

नमो यामि॥ मूलमन्त्र॥ आ वा रु ना दि॥ कुरुं न वं र नी मूर्ता दर्श य ७॥ १॥ आः
यू (ध) स्मान म ४॥ जो श्रीं डां डां कां वूं स ४ उ म न म ४ काम श्वर काम श्वः
मी वा (ध) स्म ४ श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥ जो श्रीं थां आ मा रु ना य
काम श्वर काम श्वरी वा य श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥ जो
श्रीं आ जो वं गा क व् (ध) य काम श्वर काम श्वरी या ग श्री या द् कां
यू उ यामि न र्ये यामि॥ जो श्रीं आ कां रु म ना य काम श्वर काम श्वः
श्वरी म् रु ग श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥ रि का (ध) य न म ४

॥ त्रं कुरुं मृति र व क काम नू य या १० मि त्री ग ना थ लि के काम श्वर
द वी यू डा ल ग कि श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥ को उ
कुं उ म् य र क जाल श्वर या १० म् षा ग ना थ लि के व क श्वरी
द वी वि ष्ठा म ग कि श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥ सो ४
कुं सा म र व क यू गि नि यो १० उ षि ग ना थ लि के रु ग मा
लि न उ द वी व क्ता ल ग कि श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥
कुं कुं को ४ रि व्वा मि का श्री या द् कां यू उ यामि न र्ये यामि॥

वमूडा॥॥ वलि॥॥ इवोवठ कनाथयवलिं गृह्ण २ स्यादा॥॥ इ पांथागि
नीत्या वलिं गृह्ण २ स्यादा॥॥ इ को कृषया लाय वलिं गृह्ण २ स्यादा॥॥ ग
गणय गमय वलिं गृह्ण २ स्यादा॥॥ इ सर्वविद्यु कृष्या सर्व हन लभ्य वलि
गृह्ण २ स्यादा॥॥ आवाहनादि॥॥ यानि मूडादिर्गण्ये॥॥ ॥ कुमावि
पूजा॥॥ आभनगकयत्यादि॥॥ मयूनासनामपादका॥॥ धन॥॥ कोमावाः
यवमादवी नीललाहाननजसा। जटाहृदधवीदवी अन्यवाहयन
वि। विसालवेदनादया यथैव नु निहानना। सोमयकपुलंदका

दक्षिणयलविना॥॥ मध्यानागिनावज्जी समून्ननयथाधनी। द
क्षिणयगकादवी वालमाकायसाहना। यामोरयगिनाजंघा दक्षि
णयाननायिषा। मयूनावाहनादवी सर्वग्यासायवा॥॥ प्रियांजलि
त्रेजयंकुंजं प्रुं कां कां कूं कूं कां ग्राकूमावाविशुपादका॥॥ ३॥ वलि॥॥
गायत्री॥॥ नृकूलकोमावावि शुं मृदु मनुकाटिसाधामहानना कोलि
पुथाहया॥॥ धनवलि॥॥ को ग्राकोमावाविशुपादका॥॥ धनवलि॥॥
अथाववकवगिसि॥॥ मरुगयूजा॥॥ बुद्धाध्यादिपूजनं॥॥ आसनादिपूज
नयलि॥॥ अभलाकोसं प्रियांजलि॥॥ आवाहनादि॥॥ यानि मूडादिर्ग

[illegible][illegible]

मस्तथा॥ निजैव शुभं नियुक्ता, निधनमपिरुदुक् ॥ नमस्तुभ्यं वा
भूक्ता, यस्तु वा कस्तुका युक ॥ सुव १८५॥ न नैविन्द्र्या इशानमभू
कव ४॥ सुन ४॥ ययु ४॥ ययि म्हायो ययि ४॥ यालयित्वा सिगाजग ॥
गय ४॥ सुसदा कालं, वलियूजा निव दय ॥ यत्वा नस्तु गुरु पा ल ॥
विज्ञाया गुरु न वलि ॥ ह्यग न नृय क्ताय, स्था या विवलि को दि ॥
॥ नित्या मि का विर ता न ४॥ क्ता य दा ०० न न न ॥ वृत्त ना ४॥ यि क्त क
म ४॥ यि क्त नृयि क्त लाय न ॥ द, क्ता के ना ला सुयू ग ४॥ क य ला

रुव १८५॥ क्ता ला ४॥ का ग्मा न र नृय ॥ रव १८५॥ सुगम लि मा न रु १८५॥
ये १॥ यय्य ये मे सुथ यय्ये द्वाये द्वाये सुगु गुले ४॥ का वि ना न्म रि
ना ये १॥ क म यू जा य ना य १॥ य १॥ वा ये १॥ गो ना ये, न यि ना का
म दा स दा ॥ म नृ १॥ न न स वृ १॥ वि वि व द्वा लि दा न न ४॥ न इ रि क्त
रु व रु १॥ ना य स ग्मा दि के रु रु य ॥ नि र्य यु म्मा ना जा, स वृ १॥ व नृ का
रु व १॥ ००॥ वि ना न ल रु न का मा न्, स य म य स दा ज य ॥ न १॥ ००॥
रु १॥ म्मा का य १॥ व न र १॥ याले म हा य ल क यि ल ज दा रा न रा

[illegible]

॥ दूँ का नीला श्वरी कीर्त्तार्थ भूषा काल रुद्रिय। मातङ्गा का कट्टरियः
तथैव प्रवृत्तवान् ॥ वाङ्मय धारणादाय न काङ्क्षी विध्य रुद्रियः ॥ रु
यं कवीर्षी प्रवृत्तवान् ॥ शुक्लाङ्गी नवराजनी। वी नरुद्र मला काली कङ्क्षी
लायि कालनी। काय नारी मरुद्राय वायुय गुरुमानना ॥ वाङ्मय वैश्वी
वीडा चर्चिका हुनी श्वरी मथा। वावादीनामसि यः गिव दूनी यदु ४ मष्टिका
॥ ०० दन्द्या मरुथा गिवलि गृदु कुमसदा ॥ कौशोष वही यागिनी सा
यलि गृदु २ सर्वे भक्ति कृ २ सर्वे धियिना सय सर्वे भाग्य भक्ति कृ २

[illegible]

नुद्वानां यागिनी गण संकला ॥ कृद्रुका निद्रुस्यवानि इन्निमि
 लान्द्रुका विना न। निद्रुकेन नुद्वानां यागिनी गण संकला ॥
 रुकोनादिषु यमो ॥ सुयः सावो ॥ युकी रिंगा ॥ डीषधी ॥ अतु संका
 लादि ॥ सुविदि ॥ सुयः ॥ मदीया ना लव ॥ सुतर्व ॥ ला न क न व
 दा यागिनी भागयुक्ता ॥ समेय निद्रु नुसा व का ॥ वी व क म सुवी
 व न्द्रा ॥ सत्य निद्रु नुद्वाना ॥ सिद्धा ॥ युयुका या या ॥ सा व का दि
 नि ॥ यि न ॥ न ग न वा थ ग्रा न वा ॥ नूट ॥ आ म्हा स निद्रु न। वा यि कृ वे क

दृष्ट्वा, ममान माह मधुले ॥ नाना नृपयधना न्ययि, वटजा विविधानियानि
यसर्वेयि सनुषा, वलि गृह नु सर्वेन ॥ शयन गताया रुकवा, सर्वे भग
हृलप्रद। वावर्थ यन्मया कर्म, यत्कविष्यामि मत्कृती ॥ वलियूषा प्रदाः
नन, सनुषा मम चिकका ॥ सर्वे कर्माणि सिद्धन्तु, सर्वे दायाः प्रसाः
नुभ ॥ शिवशक्ति प्रसादन, शाक कालां नमा म्यदं ॥ वृत्ति समय वलि ॥
अज वैजा कीं कुं रुद्र यशु वा रुसह नाश्रवना लाकृदया लका। जाकि न्य
श्रुत ममाना, यन्मनाटक यशुना ॥ यी ० जाश्रुत जाश्रुत, गकुजा सह

डा रुथा। भागडा मनुजाः श्रेयः कलजाः श्रविः शमठः॥ नाना दूयधना
 श्रान्ता, शान्तिना वलवकना। नानादशानियासिन्ना, श्रस्मिन् कुसमागता
 समया कृतयया नाना च वलिकी क्रिप। हृद्यकः श्रववेदिये गन्धय
 व्यादिरुन्मुखे॥ हृकाददनुभकामान्, वाङ्मनार्थददस्यम। ह्रं २
 रुठवल्लि गृह्ण २ ह्यादा॥ ह्रुति युवयधुं अवलि॥ ॥ विंशदुष्टयक्राउः
 नायोदिविगगनय ह्रनलनिष्कनवा, याना लवाने तवासासिलयवनः
 या श्रेयदुष्टहितावा। ह्रुतायीः श्रययी श्रदिष्टयदुष्टनयदायूष्यधूय

[illegible]

ॐ व त्रिपुरासुदरी से क्षेप पूजा विधि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अहं कृष्णं कुरुष्वः ॥ इति श्रीमहाभारतम् ॥ १० ॥

ASHA ARCHIVES 3126

[illegible]

गानामा॥ प्रियनया॥ क्रुमानाया॥ यथाबान॥ नमस्कान॥ नर्यथा॥ प्रामिप्रुग
॥ वृययजा॥ वनसि धननय कायवलि सधान॥ स्नानननकु यक॥ न्यास
॥ वृं मृदु सात्ताने म॥ त्यादि॥ वृं दं दया म न म॥ त्यादि॥ प्रियां जलि
॥ वृं वृं यथाय न म॥ ३॥ न्यावाहनादि॥ (धनमृदा॥ जाय॥ वृं वृं त्या
॥ १०॥ मुनि॥ स्वधाम स्वतना साय॥ शक्ति का म्यायन त्यल॥ यशु वृं य
त्यया शा य॥ स्वधु नाथ न भा मुन॥ विन्दु य॥ ॥ इयुदया वतु न सि व
क॥ इह सनि वत्त न माय॥ इह मृ म्या य रुट्॥ ३॥ वलिवि म॥ हनाय वि

विभा काला हविदिया कवि रुग॥ यागाल नल वा सि न्या॥ क न म्भ नि २७
गि वा रुया॥ वृं दं वलि यदु १ स्नादा॥ मगात माय वलि रुया॥ स्नान का
माय इयु मा भाव स लं वन रुया॥ वनसि धननय क॥ स्नाने कु य क॥
न्यास॥ इह मृ म्या य रुट्॥ वृं त्यादि कला ग न्यास॥ यजन॥ गीत्वा गी
कलाये न म॥ गिवा॥ भनिक लाये न म॥ स्कन्द॥ विद्या कलाये न म॥
गुठ॥ युगिष्ठा कलाये न म॥ नाहो॥ निवृत्तिक लाये न म॥ स्नाथान॥
वृं क्रां न म॥ गिवा॥ वृं क्रां न म॥ यदु॥ वृं क्रां न म॥ गुठ॥ लामयिः

लामन॥ गयत्री कान॥ ॐ यद्युपाधमविद्वद् सत्त्वं तत्त्वाय धीमहि न त्रा क्य
मेव यादया ॥ दवया याव स थ दाय समय न क ॥ लं वत म ॥ अद्यादि ॥
वा क्य ॥ श्री य न द व ना ये क्का ग व लिं स म र्य यामि ॥ यद्यु न द्वा मि द व गिय
रू या मय वा स्य र्ता ॥ अस्मा यि स्व र्ग सै यं लिं वि यू वा ये प्र य द्ध म ॥ मू द्वा य का व
न र्यं य या य ॥ स म ये द्वा य ॥ स क ल र्क का य ॥ दक्षि ॥ क न न का का य ॥ व लि
॥ थ य ॥ ॥ क्क द्वा व यू जा वि य ॥ क्क क न न या क्क क व स या अरि थ क
का य ॥ उ कान वा यू वी र्ज या दि ॥ ये न स्था न मा रु नी स ग न का

या ॥ सिं धु मू द्वा का य ॥ क्क मू द्वा य ॥ पूर्व व न्द या य ॥ सा रि थ य
॥ या ग द्वा म न या य ॥ इ म नि का या य ॥ वा य सु र्वा मू र व या य ॥ क्क
मू र यू जा वि स र्क न या द्वा य थ य स क्का य ॥ वि व र्ता क्क ॥ क र्क
क क्का य ॥ क र्क क मा अरि थ क का य ॥ ॥ हं ति सै थ य य द्ध
नि स मा य ॥ ह र्क म मू र व द्वा ॥ ॥

१५॥ यथातिथिनासनं सारवर्गयद्वनं ॥ एतन्वदामन्त्रमस्ति ॥ यथा ॥ यथासनं सारः
 १६॥ निगिद्धं निरुद्धं ॥ लाकया लाक्यं निरुद्धं ॥ नक्षत्रं नक्षत्रं सूर्या ॥ धर्मयिष्टिगण
 १७॥ संकलनामा नक्षत्रं यथा लाया गिन्ना ॥ मा गयूका ॥ जलथलस्वयं वा यानमः
 १८॥ गत्यिवन्तु ॥ यिवन्तु दवगासर्वा वृद्धा ॥ ये व विनायका ॥ या गिना ॥ नक्षत्रं य
 १९॥ लक्ष्म मम दक्षयवस्ति ॥ यथम ॥ अष्टाविंशतिकर्मा अनमष्टाविंश
 २०॥ तिमण्डल ॥ यिवयवकुस्तिना वन्द्य ॥ अष्टासकसमन्विता ॥ नमस्तु वक्रवस्ति ॥
 २१॥ स्तु नमस्तु स्तु नदायक ॥ नमस्तु रुवयवयाय ॥ नमस्तु रुवगावक ॥ अष्टा

72

[illegible]

卷之四

मनयुवापि कं नमामि साष्टक्यागिनीगनं यागिनीचक्रमध्वरुमाह
 मधुलसंस्मिन्नमामिगिवसानां नदीहेनदीयिया आयदाइविनामो
 गममयाचाविवचना। सवीकयव्याहनु दिव्यचक्रसंभवनाना
 ना। सैवकानांयुगियालकानां डिगन्ति सामान्यतयाधनानां
 । देस्यनागस्ययुवमंरुहा कानामिभक्तिरुगकानुक्रुजसा॥मा
 भामान्नयिनावनसुस्मिन्नववनवयानमसासासमेसासाया
 नित्यानिर्वकरीनन्दनुसाधकाकुलाश्रुनिमादिसिद्धासायायगः

ना३

नुसमय। कयागिनीनी सासासवीसूवगिकामयिकायवस
 जस्याववननपीजमकदव॥ नन्दनुसाधकासिद्धा मन्दनुक्रुन
 यागिना। नन्दनुसाधकायायययान्यक्रुनाददिनसुरिवनसनु
 सुवानिसनुददिम। युसादयुसदानां ववनपडोवधवनन॥ ॥

श्रीगणेश श्रीगणेश श्रीश्रीगणेश श्रीगणेश

दुर्गाङ्गालन

यैवामाग

कउजम

यकोचन्द

गाय, यगास

धन, यिगाते

उजमका

ध्यास २२

मुग्गलेय

कृष्णगद्ग

कण्डुपगा ८

यचयगाका ८

अदवालेया ८

दुष्टिगद्ग

दुष्टिचरो ८

यंनले ३

लिङ्गलेगा १

सिधुगो

गालाकउजम १२

रुगाङ्ग १॥

कृगालामले

दो. क्रो

रविजो १३ ३१

वन्ता

रु

धुसा

यन्तलेन

जिफले

कृष्णाले ३

म्याच केग

लेयवामा ५

मूकले, या

माग या १

यलेको १

सा को १

यलेयले

यय, याले

दूदसेला

दूदयमा

पलगा २

रवा १३ १२

आगानिक

कृसीकि १

नरको गमानको ३ स्थानि

मगाको

मसदाको

स्वानदको

मेवि

नयको

मयव

यिवाले

मो ०

अ ५

मयव

यिवाले

मिथ

लेन ७

यलेन ७

अवेन

लेवेदे

जिगलेले

पला

सकलेह १

ला

मालक १॥

गाय

लेव

मूग

माम

कनलेले

लासले

लायमले

कोमले

शरव

वनवनदको

अनवनदको

श्यापाइको २

पा २ कासया

पा २ कासया

उमाकि पाग

य ३ सिज फेला

य १ रिगा केले

य १ काकेनि

य १ सिमया

यागा चा केनि

य १ कासया

य १ का

ख० कांस्यावागा०
पा० अथिवाक्रीणि०
क०॥ कोडकायिनि०
क०३ य० इवाकाप०३
ख०२ य० सुका०२
सा० धि० ३
व० गा० ना० धि० ना० जा० कि०
पु० जा० ३० ग० जा० कि०
सि० सा० कु० सा० रु० का० ५
ख०२ य० वा० व० सा० ५ सा० हा० नि०













॥ श्रीगणेशाय नमः ॥